जयहिंद गरीब बच्चों के लिए खोल चुके हैं 12 पुस्तकालय, परीक्षा के दौरान लाइब्रेरी को बना देते हैं छात्रावास

अब तक 50 निर्धन बच्चों को बना चुके अफसर

जमशेदपुर। मनोज सिंह

संजय कच्छप ने खुद तो कांटों की चुभन सही, लेकिन गांव के गरीब बच्चों के लिए वरदान बनकर उभरे। इन्होंने बचपन में ही ठान लिया था कि जब कभी वह सक्षम होंगे तो किसी गरीब बच्चे की पढ़ाई पैसे के अभाव में बंद नहीं होने देंगे। कारण, बचपन में वह खुद एक-एक पैसे के लिए मोहताज थे। दो भाई व एक बहन में सबसे बड़े संजय ने दिन-रात पढ़ाई की। वह 2005 में रेलवे भर्ती बोर्ड के अंतर्गत तीन अलग-अलग पद की नियुक्ति परीक्षा में सफल हो गए तो परिवार के साथ-साथ पूरे गांव में खुशियां मनाई गईं।

2008 में संजय ने झारखंड लोकसेवा आयोग की परीक्षा पास की और आज वह जमशेदपुर में कृषि उत्पादन बाजार समिति के सचिव हैं। नौकरी मिलने के बाद से वह अपना अधिकतर समय गरीब बच्चों का भविष्य गढ़ने में लगा रहे हैं। कोल्हान प्रमंडल में दर्जन भर से अधिक लाइब्रेरी खोलकर वह बच्चों को किताब खरीदने की परिपाटी से दूर कर रहे हैं। खुद क्लास भी लेते हैं।

इनके शिक्षण से अब तक 50 से अधिक गरीब बच्चे अधिकारी बन चुके हैं। आज भी संजय अपना आधा वेतन गरीब छात्र-छात्राओं की पढ़ाई पर खर्च करते हैं। इनके पुस्तकालय में 11 हजार से अधिक किताबें हैं। इनके प्रयास से चाईबासा के मनोज खलखो (सहायक प्रबंधक, इंडियन ओवरसीज बैंक) व पंकज रवि (सहायक प्रबंधक आईडीबीआई) के अलावा 50 से अधिक बच्चे अच्छी नौकरी कर रहे हैं।

जमशेदपुर के परसुडीह स्थित कृषि उत्पादन बाजार समिति के सचिव संजय कच्छप अपना समय गरीब बच्चों का भविष्य गढ़ने में भी लगा रहे हैं। ● **ब्यूरो**

अब डिजिटल क्लासरूम

चक्रधरपुर स्थित कोलचकड़ा के पास कुडख गांव में संजय कच्छप ने एक डिजिटल लाइब्रेरी खोली है, जहां सात कंप्यूटर हैं। दूरदराज के गांवों के बच्चे यहां कंप्यूटर की शिक्षा ले रहे हैं। संजय कहते हैं कि वह बहुत जल्द यहां डिजिटल क्लासरूम खोलेंगे, ताकि गरीब बच्चे भी बेहतर व आधुनिक शिक्षा ग्रहण कर सकें। संजय की इस मुहिम से प्रभावित होकर अब कई संस्थाओं के लोग भी उनसे जुड़ रहे हैं। संजय के भाई व उनके रिश्तेदार भी उनकी मदद करते हैं। संजय अब तक झारखंड के विभिन्न इलाकों में 12 पुस्तकालय खोल चुके हैं।

सराहनीय पहल : शासकीय मिडिल स्कूल के शिक्षक को राज्य स्तरीय सम्मान के साथ मिले थे 25 हजार

पुरस्कार की राशि को शिक्षक ने प्रयोगशाला बनाने में किया खर्च

देवरीकलां। प्रयोगशाला में यूनिफॉर्म में बच्चे प्रयोग करते हुए। ● नवदुनिया

राहतगढ़। पुराने और बगैर यूनिफॉर्म के स्कूल परिसर में बैठे बच्चे। ● नवदुनिया

देवरीकलां। नवदुनिया न्यूज

देवरी ब्लॉक के मढ़ पिपरिया मिडिल स्कूल के शिक्षकों ने सराहनीय कार्य करते हुए बच्चों के लिए आधुनिक प्रयोगशाला बनवाई है। इस प्रयोगशाला का कार्य स्कूल के शिक्षक अशोक राजौरिया ने उन्हें पुरस्कार में मिली राशि से किया है। जानकारी के मुताबिक मढ़ पिपरिया स्कूल ने राष्ट्रीय स्वच्छ विद्यालय के रूप में प्रदेश में पहला स्थान हासिल किया था।

इस पुरस्कार के रूप में स्कूल के प्रभारी प्रधानाध्यापक अशोक राजौरिया को 5 दिसंबर 2018 को राज्यपाल अनंदी पटेल ने राज्य स्तरीय सम्मान के साथ 25 हजार रुपए की पुरस्कार राशि दी थी। इसके अलावा शिक्षक राजौरिया को अन्य सम्मान समारोह में भी पुरस्कार मिले थे, जिसको उन्होंने बच्चों की आधुनिक प्रयोगशाला बनाने के लिए खर्च किया।

जानकारी के मुताबिक शिक्षक राजौरिया ने प्रयोगशाला बनाने के लिए स्कूल के एक अतिरिक्त कक्ष में प्लेटफॉर्म का निर्माण कराया। इसके बाद वॉश वेसन सिन्क सहित सुविधाएं बनाई। पानी की सुविधा के लिए नल फिटिंग एवं विज्ञान सामग्री रखने के लिए रैक बनवाया। प्रयोगशाला को आधुनिक लुक देने के लिए दीवारों पर पुट्टी कराई गई। इसके बाद पेंट कराया। बच्चों को बैठने के लिए टेबिल तथा कक्ष में वैज्ञानिकों के चित्र को उकेरा गया।

वर्तमान में शासकीय स्कूल में पूरी तरह आधुनिक प्रयोगशाला नजर आ रही है। इसमें कई प्रयोगों की जानकारी देने के लिए चित्र भी लगाए गए हैं। इस प्रयोगशाला का बच्चे विज्ञान के प्रैक्टिकल के वक्त उपयोग कर रहे हैं। बीएसी अरुण दुबे ने बताया कि मढ़ पिपरिया में जिस तरह से आधुनिक शाला का बनाया गया है। यह जिले की अपने तरह की पहली प्रयोगशाला होगी। शिक्षक अशोक राजौरिया ने पुरस्कार से मिली राशि को इस काम के लिए खर्च करने एक सराहनीय कार्य है, जिससे सभी को प्रेरणा लेना चाहिए। उन्होंने बताया कि मढ़ पिपरिया स्कूल में पूरी तरह डिजीटल सिस्टम से पढ़ाई होती है।

स्वतंत्रता दिवस पास, फिर भी नहीं मिली गणवेश

राहतगढ़। इस साल स्वतंत्रता दिवस आने को है, लेकिन बच्चों को अभी तक गणेवश का आवंटन नहीं हुआ है। ऐसे में जिले के सभी छात्र-छात्राएं या तो पुरानी गणेवश में ही स्कूल जाएंगे, या फिर रंग-बिरंगे परिधान में ही राष्ट्रीय पर्व मनाएंगे। प्रदेश सरकार द्वारा सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले कक्षा एक से आठ तक के बच्चों को निशुल्क गणवेश दी जाती है। प्रदेश सरकार की घोषणा के अनुरूप गणवेश का वितरण शिक्षण सत्र के पहले ही होना था, लेकिन स्कूलों में अब तक इसका आवंटन नहीं हो पाया है। जानकारी के मुताबिक बच्चों को गणवेश न मिलने से वे पुरानी गणवेश में ही स्कूल पहुंचेंगे। इस संबंध में अधिकारियों का कहना है कि राशि का आवंटन राज्य शिक्षा केंद्र से ही शाला प्रबंधन समिति को होता है। फिर वह विद्यार्थियों के खाते में जमा करती है। इस संबंध में हर सप्ताह होने वाली वीडियो कॉन्फ्रेंस भी शिक्षा विभाग के अधिकारियों द्वारा लगातार बताया भी जा रहा है, लेकिन अभी तक कुछ नहीं हुआ है। हर बार प्रक्रिया चल रही है कहकर टाल दिया जाता है। कक्षा 1 से 8वीं तक सभी छात्र-छात्राओं को गणवेश की राशि मिलना है। प्रत्येक विद्यार्थी के मान से 600 रुपए खाते में ट्रांसफर होंगे। राशि नहीं आने के कारण बच्चे अपने घरों पर पहनने वाहे कपड़ों में स्कूल पहुंच रहे हैं। कुछ बच्चे पुरानी गणवेश पहनकर स्कूल आ रहे हैं। लोगों का कहना है कि यह पहला मौका नहीं है, जब बच्चों को शिक्षण सत्र शुरू होने के करीब डेढ़ महीने बाद तक गणवेश न मिली है। इससे पहले भी ऐसा हुआ है। बीते साल ही स्व-सहायता समूहों की माध्यम से गणवेशों को बनवाया गया था। कई जगह तो हालत ऐसी हुई कि शिक्षण- सत्र समाप्त होते-होते बच्चों को गणेवश मिल पाई थी।